अतीत की ओर...

प्रमिला

माँ से मातृभाषा तक...

वर्ष : 01, प्रवेशांक : 01, फरवरी 2023

मूल्य : 20 रुपए | पृष्ठ : 4

ई – पत्रिका उपलब्ध है : www.rachnakosh.in

कनिया खातिर डोली नीमन
तेवहारन में होली नीमन ।
दुनिया के सब धन - दउलत से
महतारी के बोली नीमन ।।

- डॉ. ज्ञानेश्वर 'गुंजन'

'शैलेंद्र' वाला भोजपुरी याद आवेला...

सरोज कु. मिश्रा (अनजाना)

भोजपुरी पर अश्लीलता के दाग लाग चुकल बा। ऐ बात से केहु इंकार आज के समय में नईखे कर सकत । भोजपुरी धनी रहे आउर अबहूँ बा ई बात से भी मुँह नईखे फेरल जा सकत । एगो समय रहे जब फिल्मी दुनिया के आसमान के सितारा भोजपुरी सिनेमा के धरती पर उतरल रहे लोग आउर भोजपुरी सामाज पूरा चमक गइल रहे ।

आज उहे चमक के चाह में भोजपुरी भटकत बिया। एकर ज़िम्मेवार के बा ई बात कहल संभव नईखे। भोजपुरी सिनेमा जेतना एकरा सम्मान के उंच कईले रहे ओहिजा एकर संगीत धीरे-धीरे अश्लीलता के अन्हरिया में एकरा के धकेल देलख और ऊ चमक अइसे गायब हो गईल जैसे दिन के अंजोर में जोन्ही।

सुनहरा आगाज : अतीत के ऐनक में जब-जब हमनी देखेम सन तब भोजपुरी के ऊ दौर के चेहरा ज़रूर लउकी जब भोजपुरी के पहिला फिलीम "गंगा मैया तोहें पियरी चढ़ैबो" 22 फरवरी 1963 के, पटना के वीणा सिनेमा में रिलीज भइल। आज के पीढ़ी जवन फेसबुक आउर इंस्टाग्राम पर रील बना के भोजपुरी के अश्लील कहता, ओकरा ई बात के जान आश्चर्य होई कि भोजपुरी के पहिला फिलीम के गीत रफ़ी साहेब और लता जी जईसन महान लोग गईलख आ ओतने ना गीतकार शैलेंद्र ऐ फिलीम ला गीत लिखले और चित्रगुप्त जी (सिवान) संगीत देले रहीं । 'शैलेंद्र' के बेस्ट गीतकार आउर 'रफ़ी साहब' के बेस्ट सिंगर के आवर्ड ए फिलिम के गीत "सोनवाँ के पिंजरा में... " खातिर 1965 में मिलल । रफ़ी साहेब के दुनिया आजो जानत बा । शैलेंद्र हिन्दी सिनेमा के मशहूर गीतकार में से एगो बारन । उनकर ई गीत त रउआ त ज़रूर सुनले होखेम "मै शायर तो नहीं... " बॉबी फिलीम वाला ।

चिंतित भविष्य : भोजपुरी हमेशा अपना ओर अच्छा लोग के ले आइल बा । अब ई बात के समझे ला हमनी के तनी सा अतीत की ओर जाये के परी लेकिन सच्चाई एगो इहो बा कि ई भोजपुरी के जवन खुश्बू लोग के अपना ओर खिचत रहे, आज अश्लीलता के बदबू से अईसन भर गईल बा कि सभ्य आदमी भोजपुरी गीत सुने के नईखन चाहत, अगर कुछ कलाकार लोग के बात के नज़र अंदाज़ कर दिहल जाव तब ।

ऐतिहासिक धरोहर को भूलते सारणवासी

"200 वर्ष पुराना ऐतिहासिक मंदिर आज भी अपने विकास का बाट जोह रहा है"

अभिनंदन पाण्डेय

अतीत को सँजोये, अपनी दिव्य संरचना के लिए जाना जाता, छपरा – मरहौरा रोड में स्थित गढ़ देवी मंदिर का इतिहास 200 वर्ष पुराना है। छपरा से लगभग 15 किलोमीटर दूर पटेढ़ा बजार में स्थित इस मंदिर की भव्यता ने बिहार के मानचित्र पर एक अलग पहचान स्थापित किया है। ये कहना गलत नहीं होगा कि पटेढ़ा गाँव का पहचान भी इस मंदिर की वजह से जाना जाता है ।

60 मीटर ऊँचा टीला पर निर्मित इस मंदिर के संबंध मे व्यवस्थापक 'कृष्ण प्रताप सिंह' का कहना है कि अंग्रेजों की क्रूरता से स्थानीय लोग काफी परेशान रहा करते थें । लोगों के सुरक्षा के लिए 'राजा धमसिराम' ने मिट्टी के टीले का निर्माण करवाया, जो चारो ओर से घिरा हुआ है ।

गढ़ देवी मंदिर (पटेढ़ा)

19वी शताब्दी के दौरान यह टीला पुलिस छावनी में भी तब्दील हो गया। बाद में ग्रामीणों द्वारा देवी जी की पूजा करने का प्रचलन बढ़ा तो छावनी को हटा दिया गया। बरसात के दिनों में मिट्टी का टीला धीरे - धीरे ढहने लगा, तब 60 के दशक में गाँव वासियों के सहयोग से इस मंदिर का इटीकरण का काम शुरू हुआ था।

करीब 1985 में, यहाँ एक दानपेटी बनवाया गया था, जिसके बाद सड़क से गुजरने वाले राहगीर दान पेटी में सहयोग राशि डाला करते थें। आज भी यह प्रचलन बरकरार है । 60 मीटर ऊँचे टीले पर एक नीम का वृक्ष दिखाई पड़ता है, जो 200 साल पुराना माना जाता है। स्थानीय लोगो का कहना है कि देवी माँ के द्वारा वहाँ अनोखे चमत्कार होते आ रहें हैं। ऐसा माना जाता है कि जो कोई भी मन्नत माँगता है देवी माँ उसे जरूर पूरा करतीं हैं । बीते 10 वर्षों की बात करें तो इस मंदिर पर किसी भी तंत्र का कोई विशेष ध्यान नहीं रहा है। 200 वर्ष पुराना यह ऐतिहासिक मंदिर आज भी अपने विकास का बाट जोह रहा है।

छपरा का प्राचीन 'बहुरिया कोठी'

विक्की कुमार

एक लंबे इतिहास को समेटे हुए 'छपरा' का प्राचीन 'बहुरिया कोठी' का निर्माण 1870 में हुआ था ।

प्राचीन 'बहुरिया कोठी'

अपनी भव्यता के लिए प्रसिद्ध 'बहुरिया कोठी' की खासियत इसके अंदर निर्मित विशाल कमरें, प्राचीन कुआँ और खूबसूरत निकासी आकर्षण का केंद्र हैं।

कोठी की खास बात यह है कि इसके अंदर शिवलिंग और मजार दोनों निर्मित हैं। स्थानीय लोगों का ऐसा मानना है कि इस कोठी के अंदर एक सुरंग भी निर्मित है। कोठी के संबंध मे गाँव वासियों का कहना है कि यह राय साहब की कोठी थी, जिनकी धर्मपत्नी का नाम बहुरिया था। कोइ संतान न होने की वजह से राय साहब ने एक बच्चा गोद लिया, जिसका नाम 'मुक्ति नारायण' था। 'मुक्ति नारायण' के दो पुत्र हुए जिनका नाम 'प्रकाश' और 'दीपक' है।

अतीत की ओर...

इतिहास के पन्नों में मार्च महीना...

1947 : बॉम्बे से इकोनॉमिक टाइम्स का सम्पादन शुरू हुआ था।

1833 : महान पत्रकार विश्वनाथ नारायण का जन्म हुआ था।

अतीत से जानें अर्थव्यवस्था की अवधारणा

शुभम कुमार

हम मानव अपने विकास के शुरुवाती दिनों से ही संसाधन के प्रति आकर्षित रहे हैं। मानव ने अपने जीवन को सुगम बनाने हेतु संसाधनों का भरपूर प्रयोग किया है। भारत शुरू से ही संसाधन परिपूर्ण देश रहा है। इस पवित्र भूमि ने न जाने कितने काल खंडों मे कितने ही मनुष्यों का भरण पोषण किया है। मानव संस्कृति भी संसाधनों के आस - पास ही पनपा और विकसित हुआ है। संसाधनों के विभिन्न काल खंडों ने भिन्न - भिन्न रूप की अर्थव्यवस्था को जन्म दिया है। भारत के इतिहास में कई साम्राज्य बने और उनका पतन भी हुआ। मौर्य साम्राज्य ने लगभग 85 % भूखंड पर शासन किया।

एक पागल शासक, जिसने दुनिया को टोकन करेंसी की अवधारणा दी

इतिहास के पन्नों को पलटते हुए उस काल को जब हम व्यापारिक दृष्टि से देखतें हैं, तब एक ऐसे शासक का नाम आता है जिसने अपने शासन मे टोकन करेंसी की अवधारणा दी थी। मोहम्मद बिन तुग़लक के राज्य में जब चाँदी की कमी हुई, तब तुग़लक ने अपने शासन में टोकन करेंसी की अवधारणा दी । तुग़लक द्वारा लिए गए इस कदम को एक साहसी कदम माना गया था। हालांकि तब ये कदम विफल साबित हुआ था। इसके परिणाम स्वरूप साम्राज्य को काफी नुकसान हुआ और इतिहास ने एक साहसी कदम लेने वाले शासक को 'पागल राजा' करार दे दिया। बहरहाल, आज के परिपेक्ष्य में ये अवधारणा काफी सफल मानी जाती है।

खिलजी और व्यापार

बदलते समय के साथ मध्यकालीन भारत में कुछ रोचक घटनाएं भी हुई, जिसने आर्थिक रूप से भारत को समृद्ध बनाया और इसका प्रभाव आधुनिक युग में बहुत उपयुक्त साबित हुआ । सन् (1296-1316) तक सल्तनत पर (अलाउद्दीन खिलजी) की हुकूमत थी। खिलजी की छवि लोक मानस पर एक कठोर शासक के रूप मे देखा जाता रहा है। लेकिन थोड़ा गहराई मे जाने पर यह पता चलता है कि खिलजी ही वो शासक था, जिसने बाज़ार मे बिक रहीं वस्तुओं के मूल्य को निर्धारित किया था। इसके पीछे की एक बड़ी वजह यह थी कि उस समय भारत पर मंगोलों के आक्रमण का खतरा था, जिसके कारण अलाउद्दीन ने अपने शासन काल में बाज़ार मूल्यों को फिक्स कर दिया और इसका लाभ जनता को पँहुचा।

दहसाला नीति और किसान

जब मुगल साम्राज्य के तरफ हम रुख करेंगे, तब हमें एक ऐसी नीति का पता चलता है, जिसे 'दहसाला नीति' के नाम से जाना जाता है। इस नीति का ही देन था कि मुगल साम्राज्य में कभी भी कर और संसाधनों की कमी नहीं हुई। ये इस नीति की सफलता रही कि कृषि के क्षेत्र मे आने वाला कर सही रूप में शासन तक पहुँच पाया और किसानों को भी समृद्ध बनाया। "दहसाला नीति" का श्रेय 'महाराज टोडरमल' को जाता है, जो अकबर के काल में साम्राज्य के वित्त मंत्री थे । 'टोडरमल' ने इस बात पर खासा ध्यान दिया था कि कृषि से आने वाला कर जितना शासन सोचता है, उतना कभी भी वसूल नहीं होता। इसके पीछे का कारण था शासन द्वारा गलत मूल्यांकन और यही गलत मूल्यांकन तब के समय में किसानों के शोषण का भी कारण बना था, जो कि वर्तमान समय के परिपेक्ष्य में भी सरकार के सामने एक बड़ा सवाल बन के खड़ा है।

भोजपुरी विशेष : (ग़ज़ल)

असो होरी के रंग फिके रह जाई
तन तऽ भिगी मन भिग ना पाई

रंग अबीर तऽ चढ़ी अंग-अंग में
पिया बिना होरी , होरी ना कहाई

बिरह आगी में तन जड़ राख भइल
आँखी से बिना लोर गिरले ना रहाई

अँजोर रात काटे के दउड़ेला जइसे
चनरमा से जाके के मोर हाल बताईं

चुनरी के चारों कोड़ लोर से भिजल
असो के फाँगुन के केई देईं बधाई

पिया के गाँव ना दूर ना नीयरे सखी
मन तऽ पहुँच गइल तन कइसे जाई

- सोनू किशोर

रितेश आदर्श

गाँव जो कभी दस किलोमीटर दूर जाकर अपनी मूलभूत जरूरतों को पूरा कर पाता था। आज उस गांव में स्कूल, इंटरनेट, बिजली और सोशल मीडिया भी पहुंच गया है।

पर कहते हैं कि विकास की कीमत चुकानी पड़ती है। गांव में इसके परिणामस्वरूप कई सामाजिक बदलाव हमे देखने को मिल रहे हैं।

फाइल फोटो

गाँव, पलायन और सिमटता समाज

आज विकास ने हर घर को बाइक और हर हाथ को मोबाइल थमाने के बाद शहरों को गांव के करीब कर दिया है। आज गांव का कृषि प्रधान वर्ग सीजन में खेती और ऑफ सीजन में मजदूरी करके अपना जीवन यापन कर रहा है।

फाइल फोटो

मेरे गांव में भी कुछ ऐसे ही बदलाव दिखाई देने लगे हैं। गाँव में पर्व त्योहारों पर लद कर आती भीड़ और फिर किसी धूल भरी आंधी की तरह अचानक गायब हो जाती भीड़, आज कमोबेश हर गांव की कहानी है। शहरों के नजदीक होने से रोजगार मजबूत तो हुआ है पर गांव की स्थिति जस की तस नहीं रही। आज गांव में सिर्फ ओल्ड एज घर नजर आते हैं, जहाँ हर दिन गिन-गिन कर छठ होली जैसे त्योहारों के जल्दी आने की दुआएं पढ़ी जाती हैं।

अतीत की ओर...

इतिहास के पन्नों में मार्च महीना...

1971 : हिंदी के प्रसिद्ध कवि आत्मा रंजन का 1971 में जन्म हुआ था।

1788 : समाचारपत्र 'कलकत्ता गजट' में भारतीय भाषा बांग्ला का पहला विज्ञापन प्रकाशित हुआ था।

सिताबदियारा का वर्तमान चेहरा

आकांक्षा राज

रउरा 'सिताबदियारा' नाम त सुनले होखेम...! जी हाँ, उहे सिताबदियारा जे.पी. जी के गाँव। जब आप सिताबदियारा आएँगे तब आपको कुछ दिखे ना दिखे, लेकिन आपका सामना दो चीजों से जरूर होगा, पहला टूटी हुई सड़के और दूसरा है - बाढ़ से पीड़ित लोग। सिताबदियारा के दर्जनों गांवों की किस्मत हर साल दो नदियों की पानी और बाढ़ पर निर्भर करता है, जब हम सिताबदियारा के इतिहास के पन्नों को पलटकर देखते हैं तो हमें पता चलता है कि कैसे इस गाँव ने परेशानियों को मात देकर एक लंबा सफर तय किया था।

अतीत की तरफ नज़र दौड़ाने पर यह पता चलता है कि सिताबदियारा एक ऐसा गाँव था, जहाँ बाढ़ की वजह से हर साल सैकड़ों की संख्या मे लोगों को अपना घर खोना पड़ता था यहाँ तक कि गाँव के कई स्कूल भी डूब जाया करते थें। गाँव के लोग यही प्रार्थना करते थे कि " हे गंगा मईया ... ए बार मत डुबइह" । लोग घाट पर जाकर नाव का घंटों इंतजार किया करते थें। जब गाँव में किसी की तबियत खराब होती थी, तो साधन की कमी के कारण लोगों को अपने सगे और क़रीबियों को खोना पड़ता था। लेकिन वहीं अगर इस गाँव के दिव्य वातावरण की बात करें तो यहाँ मौजुद दोनों नदियाँ गाँव की सुन्दरता मे चार चाँद लगाती हैं।

बलिया से बिहार तक पसरा गंगा का दीयर, जहाँ जीवन आज भी बहुत कठिन है। लेकिन 'हरिवंश' आज भी अपने गांव से उतने ही जुड़े हैं। हर साल मकर संक्रांति पर गांव में दही - चिउड़ा खाये बिना उनका मन मानता ही नहीं। अपने गाँव भ्रमण के दौरान गांव में बढ़ रहे शराब के प्रचलन और युवाओं के भटकाव को गंभीरता से लेते हुए 'हरिवंश' ने एक सम्पादकीय भी लिखा था।

'लोकनायक' के पड़ोसी और चंद्रशेखर के सहयोगी रहें 'हरिवंश नारायण सिंह', सामान्य तौर पर लोग उन्हें प्रभात खबर के 'सम्पादक हरिवंश' के नाम से ही जानते हैं। 'हरिवंश' के परिवार ने अपनी खेती की जमीन गंगा नदी के कटान की वजह से खो दी थी। 'हरिवंश' को मुद्दों की पत्रकारिता के लिए रेखांकित किया जाता है। वह उद्देशीय पत्रकारिता के मिसाल माने जाते हैं। दो बड़ी घटनाओं पर नजर डालें तो, पहला है अल्बर्ट इक्का के परिवार को मदद करने के लिए अभियान। अल्बर्ट इक्का की शहादत के बाद उनका परिवार बहुत ही कष्ट में था। परिवार के पास जीने के संसाधन भी नहीं थे। हरिवंश ने इक्का के परिवार को मदद करने के लिए अभियान चलाया। साढ़े चार लाख रुपये इकठ्ठा कर उन्होंने इक्का के परिवार को दिया। इक्का वही हैं, जिन्हे हम परमवीर चक्र विजेता के रूप में जानते हैं। हरिवंश जी की दूसरी बड़ी मुहिम दशरथ मांझी को लेकर थी। यदि हरिवंश न होते तो शायद दशरथ मांझी गुमनामी के अँधेरे में खो गए होते।

अगर बैंक और वित्तीय संस्थान ग्रामीणों को ऋण और अन्य वित्तीय सहायता करते हैं, तो यह गाँव वास्तविक विकास देखेगा। चिकित्सा व स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार करना होगा। नेताओं को भी इस गाँव पर ध्यान देने की जरूरत है। हमेशा से यहाँ के लोग विकास की आस लगाए बैठे हैं। आखिर कब देखेगा सिताबदियारा विकास की झलक ?

भोजपुरी विशेष

ग़ज़ल (भोजपुरी)

ई रूप तारासल कुदरत के,
बस एक झलक दिखला जईहअ
देखी नैना दुनु चकोर भइल,
नजरिया के पियास बुझा जईहअ

जइसे काल्ह राहलु ओइसे आज बारू,
हमरा दिलवा के तू मुमताज बारू
भले ताज महल ना बनी,
दिलवा में जगहा बना जईहअ

ए हुश्न के देवी तोहर पूजा करब,
मन मे ध्यान ना दुजा धरब,
जान जाये भी तोहरी बहियां में,
इतना भर आसरा धारा जईहअ,

बहुते दिन से तोहर दीवाना बानी,
जमाना खातिर अनजाना बानी
प्यार के अर्जी मनलू की ना,
बस इतना भर बता जईहअ,,,

- अनजाना

भोजपुरी गीत : 'टुकी - टुकी अंगना - दुआर हो गइल'

ढ़ेर पढ़ि बाबु हुँसियार हो गइल
टुकी - टुकी अंगना दुआर हो गइल।
रोज लकुराध में समइया बितावे
बाप के कमाई दुनु हाथ से लुटावे ।।
बाबूजी के सपना बेकार हो गइल।
टुकी - टुकी अंगना - दुआर हो गइल...

भइले सेयान उ धेयान कब दीहें ?
सहरे के कगरी मकान एगो लीहें।
असरा पुराइ पहचान कहाँ दीहें ?
ओठवा झुराइल मुसकान कहाँ दीहें ?
लोग - बाग घरवा के भार हो गइल।
टुकी - टुकी अंगना - दुआर हो गइल...

अजबे गढ़ाइल बाटे दुनिया के नाता
बेटवा के नाम से ही बपवो चिन्हाता।
माई के जियरा में भारी अफसोस बा
कहवाँ से आइल कुल्ही बेटवा में दोस बा।।
हियरा में घउवा हजार हो गइल।
टुकी - टुकी......

घाउ - माउ घरवा में रोवे महतारी
सुनसान भइल बाटे अंगना - दुआरी।
बेटियो - बहिन ससुराल चली गइली
बचली पतोह मुँहजोर उहो भइली।।
फगुनी अजोरिया अन्हार हो गइल।
टुकी - टुकी......

बेटा के पढ़वले में बाप गरीबइले
सुसुकत मन बाटे साँस उबिअइले।
बरसेला मेघ तब चुएला दलानी
निनिया मुहाल करें टुटही पलानी।।
बाबु के सुतार ससुरार हो गइल।
टुकी - टुकी अंगना - दुआर हो गइल....

- डॉ. ज्ञानेश्वर 'गुंजन'

शायरी (भोजपुरी)

नाव ज़िंदगी के पार लगावल
मुश्किल बा,
ए कलयूग में केहू से आपन
हाल बतावल मुश्किल बा...

ऊ हिरा त ह, ह मगर पत्थर
ही न,
प्यार करके पत्थर पिघलवाल
मुश्किल बा...

- अनीश कुमार 'देव'

पिरित के बोल अब बोलेला
होठवा,
दिहल फूल तोहार चुमेला
होठवा,
नेहिया जिनगी के सिंगार हो
गइल,
बिना पूछले सब राज
खोलेला होठवा,,,

- सोनू किशोर

साहित्य मासिक

घनश्याम

श्याम से सावन तक...

वर्ष : 01, प्रवेशांक : 01, फरवरी 2023

दर्द क्या चीज़ है नहीं मालूम,
दिल लगाने दो फिर बताएंगे...
- प्रखर पुंज

मूल्य : 20 रुपए

ई – पत्रिका उपलब्ध है : www.rachnakosh.in

मोहब्बत कही जा रही है...

तन्हाई से नज़दीकियां की जा रही है
बिना गुनाह के सजा सही जा रही है

मेरे याद में खनकते है तेरी कंगन
मै भी सोचूँ कि हिचकियां क्यों आ रही है

निकाल कर बाहर बन्द कर दिया दरवाजा
मगर दहलीज से तेरी याद नहीं जा रही है

जिसके गुरुर पे दुनिया से मुंह मोड़ लिया
छोड़ कर मेरी गली वहीं जा रही है

देख लिया न "देव" तूने ये, बातें बस
मोहब्बत कही जा रही है सुनी जा रही है

- अनीश कुमार 'देव'

उनवान

हमी इतिहास के उनवान होते।
नहीं थमते तो इक तूफ़ान होते।

हमारे 'कृष्ण' होते सारथी गर,
तो हम दिनकर से भी दिनमान होते।

विवेकी मन जो रखते 'अश्व गर्जन',
प्रबलतम पुंज बल के मान होते।

कलंकित 'कैकई' करतीं न ख़ुद को
तो सब प्रभु राम से अनजान होते।

नहीं खाते चने अभिशप्त थे जो,
'सुदामा' कृष्ण से धनवान होते।।

- प्रखर पुंज

कितना काफी होना, काफी है ?

कौन बताएगा कि
कितना काफी होना,
काफी है?

हाथों में होना चाहिए
किसी का हाथ,
या बस एहसास होना काफी हैं।

उम्र के हर पड़ाव का करे कोई इंतजार,
या अट्ठारहे तक ही
सब कर लेना काफी हैं।

एक अंजान मोहल्ले में अपना घर बसाकर,
सिर्फ खुद पर ही ऐतबार रखना
क्या काफी हैं।

गुफ्तगू होनी चाहिए, क्योंकि अल्फाज़ जरूरी है
हर रिश्ते को बरकरार रखने में,
या सिर्फ दिल के गमले में
जज्बात का होना काफी हैं।

वक्त बेवक्त मुलाकात होती रहनी चाहिए
अपनो से,
या सिर्फ
यादों के आसमां में
बातों के टिमटिमाते तारें होना काफी हैं।

अब बोलो भी,
कौन बताएगा कि कितना काफी होना,
काफी है ?

- श्वेता सिन्हा

आखरी मुलाकात...

तुम गई थी उधर तुम्हारे
पैरों के निशान कैसे हैं ।?।
और ये बताओ, तुम्हारे घर के
सामने वाला घर, जिनपे बैठ
के तुम्हें निहारा करते थे
अब वो मकान कैसे हैं ।?।

ख़ुदा कसम बड़ी गर्दिश
में होगी उनकी जिन्नत,
हमारी तरह वो भी तो
सिर्फ़ तुम्हें ही चाहा करते थे।

ख़ैर छोड़ो, तुम भला क्यों
जानोगी उनके बारे में
तुम मशगूल जो हो
अपनी शादी की तैयारी में।

ना हम, ना छत, ना वो
मकान याद है तुम्हें,
यही काफी है हमारे लिए
जो हमारा नाम याद है तुम्हें।

फिर कभी मिलु ना मिलूं
मेरी आखिरी मुलाकात याद रखना।
और हो सके तो वो कमरा जिसमें
हम छुप-छुप के मिला करते थें
उसकी हर इक बात याद रखना ।।

याद रखना जब भी कभी आईना देखोगी
ये नाज़ुक जिस्म देखने के लिए तुम्हे,
कभी आईने की जरुरत ना पड़ी
मेरी आंखें ही काफी हुआ करती थी।

और
याद रखना वो जो हमारे दरम्यान
ईश्क, वफ़ा की बात हुई थी
वो बमुश्किल तिजारत की रात हुई थी।
और याद रखना,
वो जो हमारी आखरी मुलाकत हुई थी ।।

- प्रेम शंकर

फिर से वही बन जाओ ना...

तुम बेहतर थे जैसे मिले थे,
कि फिर से वही बन जाओ ना।

पास होकर भी बहुत याद आते हो,
वो कल के तुम,
कि फिर से वही बन जाओ ना।

तुझमें तुझ ही को ढूंढता हूँ,
जो पा न सका,
कि फिर से वही बन जाओ ना।

मेरी खातिर तो, फ़क़त,
तुम बेहतर थे जैसे मिले थे,
कि फिर से वही बन जाओ ना।

- सनी सिन्हा

नींद और तुम...

तुम्हे सोचते एक और रात,
सुबह में तब्दील हो गई।
अक्सर नींद और तुम एक साथ आए।
कवियों का मानना है,
जंग खुले आम हो सकती है,
पर इश्क महफूज ठिकाना चाहता है।

बंद आंखों से तुम्हे सोचते हुए,
दरवाजे के उस पार मुझे तुम दिखी,
नींद के बगीचे में तुम,
तुम पर कत्थई रंग की बनारसी साड़ी,
ऐसी नीक छवि, ऐसा सम्मोहन,
आदमी हमेशा के लिए सो जाए।

सुबह दरवाजे चंद छींटों से खुले,
फिर परीक्षा की कापी में
तुम्हारी कत्थई साड़ी लिखते हुए
तुम्हारी मुस्कुराहट पहनकर,
तुम्हारे घुंघराले बाल जैसे,
कई सवाल मैं सुलझा आया।।

- रितेश आदर्श

प्रधान संपादक : अभिनंदन द्विवेदी | सहायक संपादक : शुभम कुमार, अभिनंदन पाण्डेय, आकाश उपाध्याय, आकर्ष मिश्रा, रवि रंजन, याचना जैसवाल, निधि सिंह | संपादक मंडल : विक्की कुमार, आकांक्षा राज, कुश श्रीवास्तव, अंकित शर्मा | संपादकीय कार्यालय : पिठौरी, बनियापुर, सारण – 841301, बिहार